Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER



कक्षा - 9

हिन्दी

कृतिका (गद्य खंड)

अध्याय-1 : इस जल प्रलय में (फणीश्वरनाथ रेणु)

भाग - 3

कुशाल सोलंकी

Under CSR Support by
ipca | Foundation

विवरण (Overview)

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

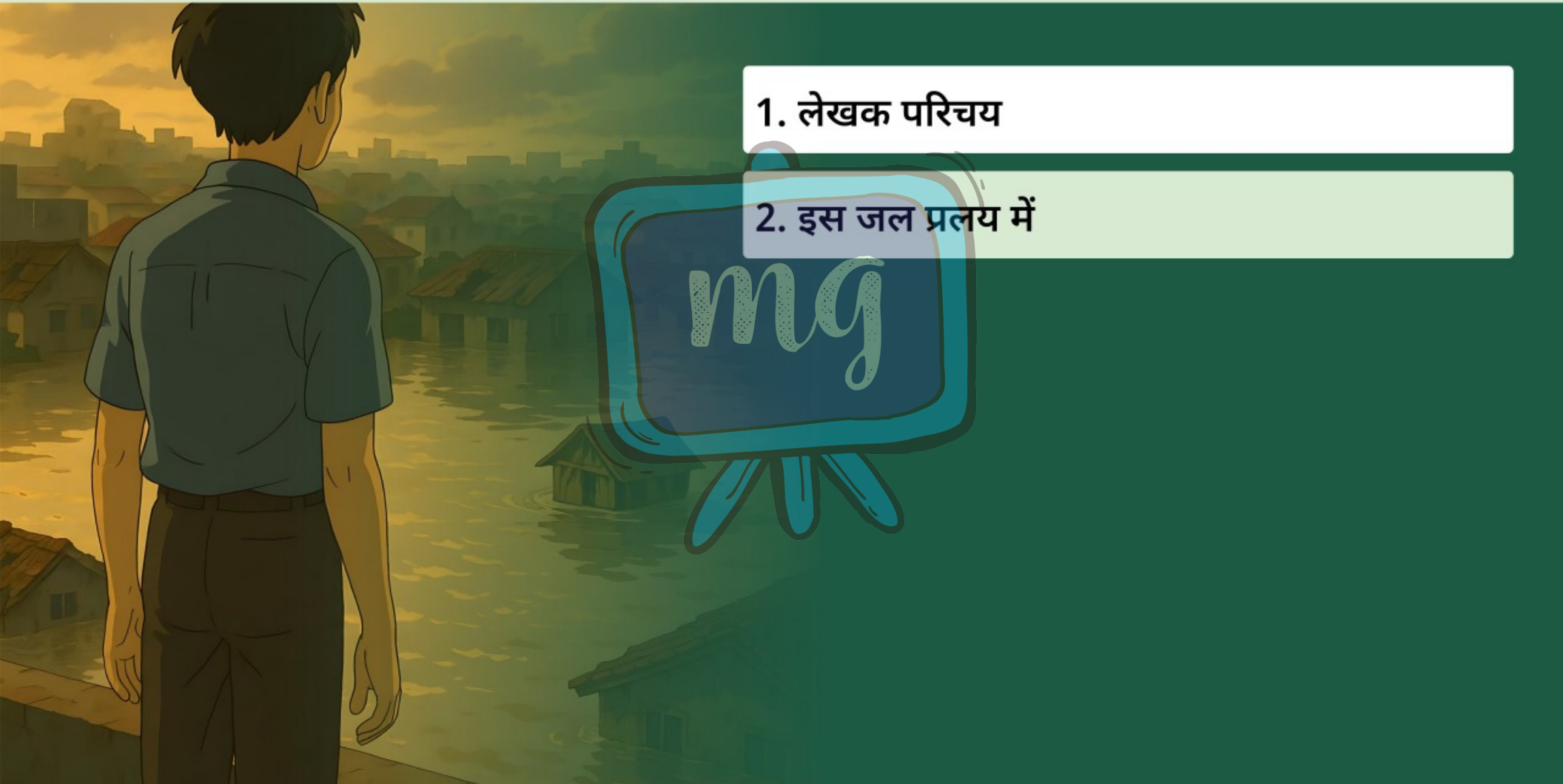

1. लेखक परिचय
2. इस जल प्रलय में

Under CSR Support by ipca | Foundation

missionngyan LET'S LEARN TOGETHER

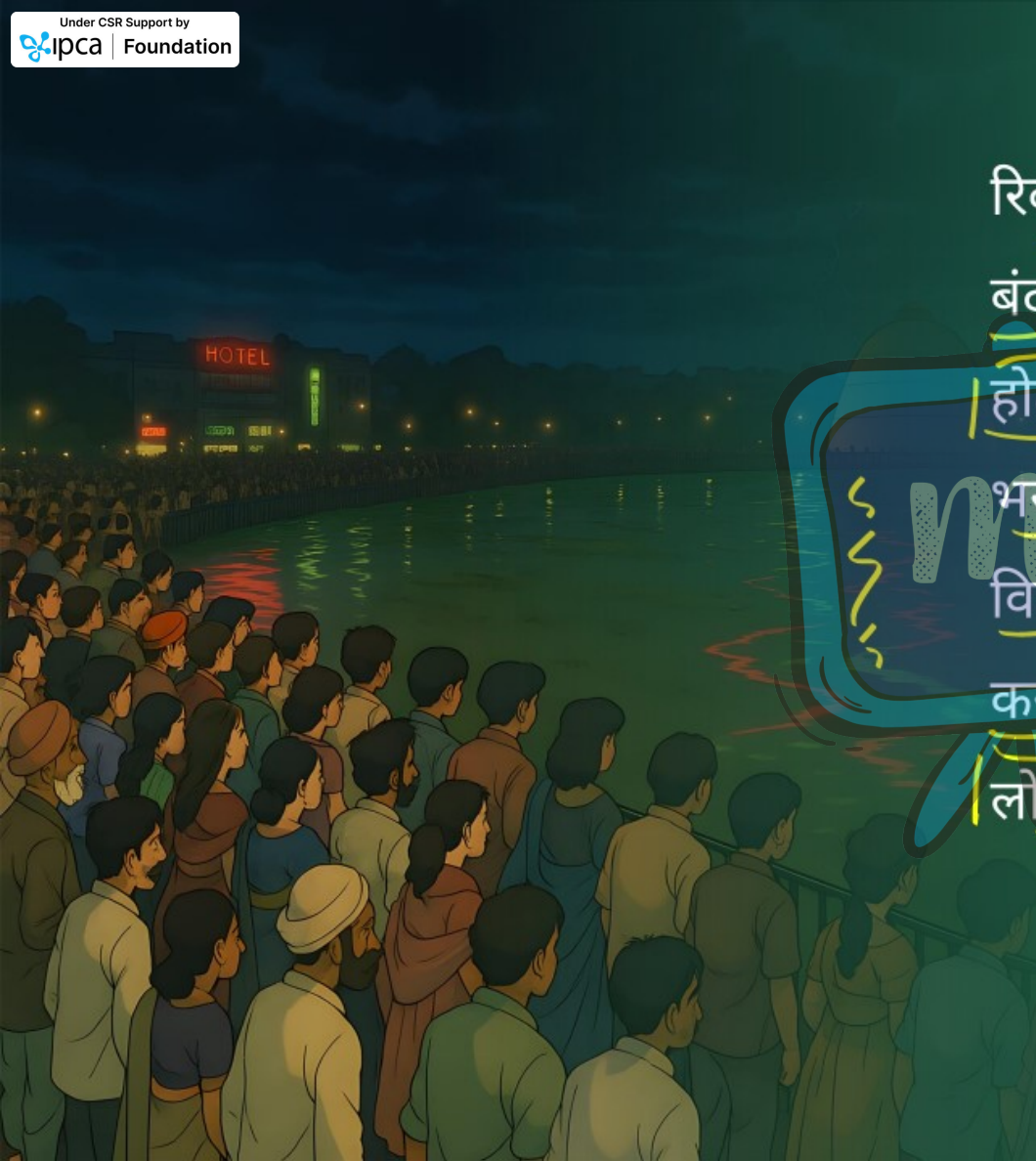

रिक्शा मोड़कर हम 'अप्सरा' सिनेमा हॉल (सिनेमा-शो बंद!) के बगल से गांधी मैदान की ओर चले। पैलेस होटल और इंडियन एयरलाइंस दफ़्तर के सामने पानी भर रहा था। पानी की तेज़ धारा पर लाल-हरे 'नियन' विज्ञापनों की परछाइयाँ सैकड़ों रंगीन साँपों की सृष्टि कर रही थीं। गांधी मैदान की रेलिंग के सहारे हजारों लोग खड़े देख रहे थे।

Under CSR Support by ipca Foundation

missiongyan LET'S LEARN TOGETHER

दशहरा के दिन रामलीला के 'राम' के रथ की प्रतीक्षा में जितने लोग रहते हैं, उससे कम नहीं थे.. गांधी मैदान के आनंद-उत्सव, सभा-सम्मेलन और खेलकूद की सारी स्मृतियों पर धीरे-धीरे एक गैरिक आवरण आच्छादित हो रहा था। हरियाली पर शनैः शनैः पानी फिरते देखने का अनुभव सर्वथा नया था।

गैरिक – गेरूए रंग का

आच्छादित – ढका हुआ

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER



इसी बीच एक अधेड़, मुस्टंड और गँवार जोर-जोर से बोल उठा-"ईह! जब दानापुर डूब रहा था तो पटनियाँ बाबू लोग उलटकर देखने भी नहीं गए... अब बूझो!" मैंने अपने आचार्य कवि मित्र से कहा "पहचान लीजिए। यही है वह 'आम आदमी', जिसकी खोज हर साहित्यिक गोष्ठियों में होती रहती है। उसके वक्तव्य में 'दानापुर' के बदले 'उत्तर बिहार' अथवा कोई भी बाढ़ग्रस्त ग्रामीण क्षेत्र जोड़ दीजिए..."

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER



शाम के साढ़े सात बज चुके और आकाशवाणी के पटना-केंद्र इसे स्थानीय समाचार प्रसारित हो रहा था। पान की दुकानों के सामने खड़े लोग, चुपचाप, उत्कर्ण होकर सुन रहे थे...

"... पानी हमारे स्टूडियो की सीढ़ियों तक पहुँच चुका है और किसी भी क्षण स्टूडियो में प्रवेश कर सकता है।"

उत्कर्ण – सुनने को उत्सुक

Under CSR Support by ipca Foundation

missiongyan LET'S LEARN TOGETHER

समाचार दिल दहलाने वाला था। कलेजा कर धड़क उठा। मित्र के चेहरे पर भी आतंक की कई रेखाएँ उभरीं। किंतु हम तुरंत ही सहज हो गए; यानी चेहरे पर चेष्टा करके सहजता ले आए, क्योंकि हमारे चारों ओर कहीं कोई परेशान नज़र नहीं आ रहा था। पानी देखकर लौटते हुए लोग आम दिनों की तरह हँस-बोल रहे थे; बल्कि आज तनिक अधिक ही उत्साहित थे। हाँ, दुकानों में थोड़ी हड़बड़ी थी।

Under CSR Support by ipca | Foundation

सीखने के प्रतिफल (Learning Outcome)

missiongyan

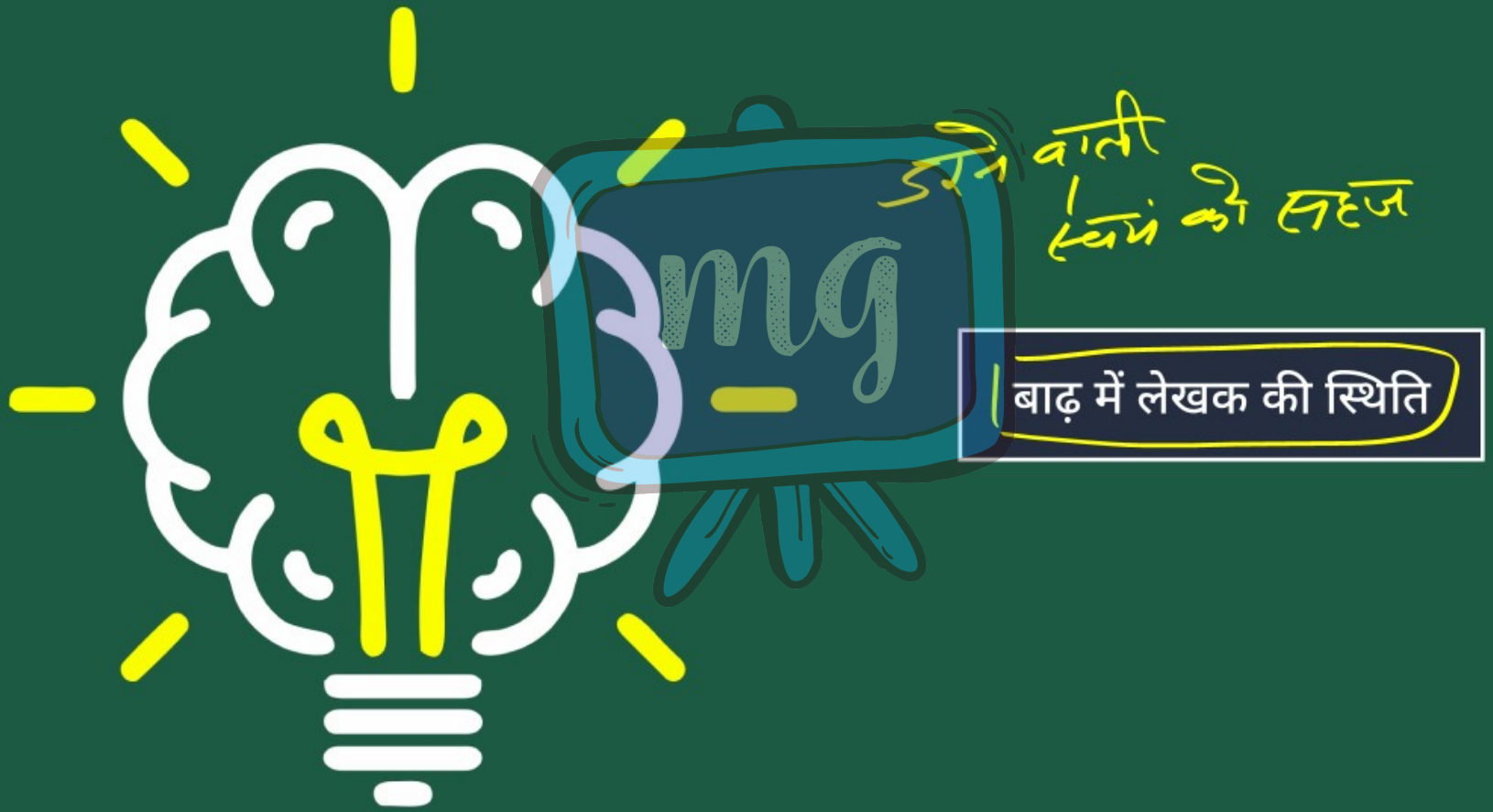

Under CSR Support by
ipca | Foundation

मूल्यांकन (Assessment)

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER



1 | लेखक 'अप्सरा' सिनेमा हॉल के बगल से कहाँ जा रहे थे?

अ गंगा घाट

ब कॉफी हाउस ✗

स गांधी मैदान

द स्टेशन

Under CSR Support by
ipca | Foundation

मूल्यांकन (Assessment)

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER



2 गांधी मैदान में लोग क्या कर रहे थे?

अ भाषण सुन रहे थे

ब मेला देख रहे थे

स बाढ़ का दृश्य देख रहे थे

द रथ यात्रा में शामिल हो रहे थे

Under CSR Support by
ipca | Foundation

मूल्यांकन (Assessment)

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER



3 विज्ञापन की परछाइयाँ पानी में किस रूप में दिख रही थीं?

अ रोशनी की लहरों के रूप में

ब रंग-बिरंगे पक्षियों के रूप में

स सैकड़ों रंगीन साँपों के रूप में

द फूलों की बेल के रूप में

Under CSR Support by
ipca | Foundation

मूल्यांकन (Assessment)

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER



4 आकाशवाणी पटना-केंद्र से कौन सी सूचना प्रसारित हो रही थी?

अ भोजन वितरण की

ब राहत कैम्प की

स पानी स्टूडियो की सीढ़ियों तक पहुँच चुका है

द ट्रेन रद्द होने की

Under CSR Support by
ipca | Foundation

मूल्यांकन (Assessment)

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER



5 लेखक और उनके मित्र ने भय के बावजूद अपने चेहरे पर क्या भाव लाने की चेष्टा की?



अ क्रोध

ब सहजता

स उल्लास

द दुख